Teacher's Manual

Carvaan

हिंदी

Middle Stage

Class

8

MASTERMIND

अध्याय 1
जयगान

कविता-बोध

उ०1. (क) कवि भारत देश का गुणगान कर रहा है।

(ख) द्वेध-दुख का अर्थ दो प्रकार के दुखों से है।

(ग) भारत की पर्वत चोटियाँ चाँदी जैसी चमकीली हैं।

(घ) सुब्रह्मण्यम भारती

उ०2. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (iii)

(घ) (iii)

उ०3. (क) कविता की निम्न पंक्तियों के माध्यम से कवि कहते हैं कि आज हमारे देश का ध्वज जो कि हमारी विजय का निशान है हम उसे फहराएँगें। हम आज अपने भारत देश का जयगान करेंगे। अब हमारे जीवन के हर दुख का अंत हो जायेगा और अब कोई भी दुख या दर्द दुबारा से प्रबल रूप नहीं ले पायेगा।

(ख) अब हमारे देश में ज्ञान की वृद्धि होगी, मन्दिर की पवित्रता के समान अब विद्या के भवन बनेंगे। हम भारत देश में ज्ञान की वृद्धि कर अपने देश को महान बनायेंगे। हम अपने देश का जयगान करेंगे।

उ०4. कविता के माध्यम से कवि कहना चाहते हैं कि हम देश का गुणगान करेंगे ताकि हमारे दुख दूर हो सकें। कविता पूर्ण रूप से राष्ट्रीय गौरव गरिमा से ओत-प्रोत है। इस कविता के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना छात्रों में जगाने का प्रयत्न किया गया है।

उ०5. (क) कवि विद्यालय को देव मन्दिर के समान बनाने की इच्छा प्रकट करता है।

(ख) देश में पवित्र विद्या के भवनों के निर्माण से देश को महान बनाया जा सकता है।

(ग) 'पोत–दल' से कवि का अर्थ नौका–दल से है।

(घ) भारत एक महान देश है जहाँ सभी धर्म के लोग मिलजुलकर रहते हैं।

(ङ) सागर की ध्वनि से राष्ट्र का गौरव बढ़ता है।

व्याकरण-बोध

उ०1.

धरा	–	भू	भूमि	वसुंधरा
पर्वत	–	पहाड़	गिरि	शैल
नदी	–	सरिता	तरंगिणी	तटिनी
अमृत	–	सोम	सुधा	मधु
जग	–	संसार	जगत	विश्व

उ०2.

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**
वन	वसुंधरा
गिरि	नदियाँ
मंदिर	गति
देश	विद्या
सुख	
अमृत, कवि	

उ०3.

शब्द	**प्रत्यय**	**शब्द**	**प्रत्यय**
हिमवान	वान	ध्वनित	इत
गुणगान	गान	विजयी	ई
दक्षिणी	ई	हिमवान	वान

उ०4.

अमृत	विष	पावन	अपावन
अंत	आरम्भ	यश	अपयश
देश	विदेश	ज्ञान	अज्ञान

अध्याय 2

महान क्रांतिकारी– चंद्रशेखर आजाद

पाठ-बोध

उ०1. (क) आजाद का जन्म मध्यप्रदेश के झाबुआ में हुआ था।

(ख) बालक चंद्रशेखर ने सिपाही हमला इसलिए किया क्योंकि वह सत्याग्रहियों को अपने जूतों से मार रहा था।

(ग) काकोरी के पास यात्री गाड़ी से शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिडी तथा आजाद ने अपने दल के लिए सरकारी खजाना लूटा।

(घ) आजाद ने अपनी कनपटी पर गोली मारी, क्योंकि उनका विचार था कि वे अपने जीते जी अंग्रेजों के हाथ नहीं आयेंगे।

उ०2. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (ii)

उ०3. (क) सेनापति (ख) 1925 (ग) बम

(घ) नीतियाँ (ङ) आजाद (च) आजाद

उ०4. (क) आजाद एक क्रान्तिकारी थे और इनके पिता का नाम पं० सीताराम तिवारी था।

(ख) मजिस्ट्रेट की अदालत में आजाद को लाया गया तब मजिस्ट्रेट ने पूछा तुम्हारा नाम क्या है? तुम्हारा घर कहाँ है? तुम क्या काम करते हो? तब उत्तर में चन्द्रशेखर ने कहा मेरा नाम आजाद है, मेरा घर जेलखाना है, और मेरा काम भारत माँ को स्वाधीन कराने की साधना है। यह सुनकर मजिस्ट्रेट के रोष का कोई ठिकाना न रहा। उसने बालक को डाँटते हुए कहा, ''तुमसे जो कुछ पूछा जा रहा है। उसका सही–सही उत्तर दो। ''तब बालक निर्भीकता भरे स्वर से बोला– ''मैं जो कुछ बोल रहा हूँ, वह बिल्कुल सही है। विदेशी सरकार की पराधीनता स्वीकार न करने पर हमारा सच्चा नाम आजाद हो सकता है। जब तक हम पराधीनता की शृंखलाओं को तोड़ न देंगे, तब तक हमारा घर जेलखाना ही होगा और वास्तविक कार्य भारत–माता की स्वाधीनता की साधना ही होगा।''

यह सुनकर मजिस्ट्रेट को बहुत गुस्सा आया और इसके बाद मजिस्ट्रेट ने आज्ञा दी, ''इसे ले जाकर 15 कोड़े मारो और मुक्त कर दो।''

(ग) आजाद हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन सेना के प्रधान सेनापति नियुक्त हुए।

(घ) आजाद किसी जंगल या पहाड़ों में छिपकर नहीं रहते थे। वे अपना नाम और वेश बदल कर जगह–जगह पर घूमते थे और अपने दल का संगठन करते थे। कई बार उनका ऐसे गुप्तचरों से भी सामना हो जाता था जो उन्हीं को पकड़ने की योजनाएँ बनाते थे। आजाद को देखकर कई बार उन्हें संदेह भी होता था। परंतु उनकी वेशभूषा और बातचीत करने के ढंग को देखकर उनका मन उन्हें आजाद मानने को तैयार नहीं था।

(ङ) आजाद की देख–रेख में भगतसिंह और राजगुरु ने लाहौर के उपाधीक्षक सांडर्स को गोली मार दी, जिसकी लाठी से लाला जी घायल हुए थे।

(च) एक दिन जब चन्द्रशेखर आजाद अल्फ्रेड पार्क में बैठे हुए थे तो एक विश्वासघाती के सूचना देने पर एकाएक पुलिस ने उन्हें घेर लिया। आजाद ने पुलिस को देख लिया और वे सारी स्थिति को समझते हुए एक विशाल पेड़ की आड़ में स्थिर होकर अपने रिवाल्वर से गोलियाँ चलाने लगे। लगभग एक घंटे तक दोनों पक्षों की ओर से गोलियाँ चलती रहीं और आजाद की गोलियों से पुलिस के कई आदमी घायल हो गए। अंत में उनकी रिवाल्वर में एक ही गोली बची तो उन्होंने उसे स्वयं अपनी कनपटी पर दाग लिया, क्योंकि उन्होंने कसम खा रखी थी कि वे कभी भी जीते जी अंग्रेजों के हाथों में नहीं आएँगे। इस तरह वे मौत की नींद सो गए और सदा के लिए अमर हो गए।

व्याकरण-बोध

उ०2. (क) बलिदान = देश के लिए कई स्वतंत्रता सेनानियों ने बलिदान दिया।

(ख) जीविकोपार्जन = जीविकोपार्जन के लिए सभी को कार्य करना पड़ता है।

(ग) पराधीनता = पराधीनता से अच्छा मृत्यु है।

(घ) सत्याग्रही = सत्याग्रही लोगों ने स्वतंत्रता संग्राम में अहम भूमिका निभाई।

(ङ) स्थगित = बारिश के कारण आज का मैच स्थगित कर दिया गया।

(च) अवलंबन = संस्थान ने अपनी योजना का अवलंबन सरकार की मंजूरी पर रखा।

उ०3. उनके, उन्हें, वे, जिन्होंने, अपना, इन्होंने, मैं, यह, इसकी, तुम्हारा, तुम, उसने, तुमसे, वह, उन, आदि।

उ०4. निर्भीकता, आत्मविश्वास, भव्य, विशाल, शान्त, गुप्त, साहसी, वीरता।

उ०5. (क) मौत की नींद सो जाना = मर जाना
स्वतंत्रता की लड़ाई में कई सेनानी खुशी-खुशी मौत की नींद सो गये।

(ख) वीरगति को प्राप्त होना = शहीद होना
देश की रक्षा में सैनिक वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं।

(ग) जान हथेली पर रखना = अत्यधिक जोखिम उठाना।
जब दुश्मन सामने हो तो भारतीय सैनिक जान हथेली पर रखकर उनका सामना करते हैं।

(घ) दाँत खट्टे कर देना = हराना
भारतीय सैनिकों ने दुश्मनों के दाँत खट्टे कर दिये।

(ङ) कसौटी पर तुल जाना = सच्चाई परखना
परीक्षा में छात्रों को कसौटी पर तुलना पड़ता है।

(च) लोहा मानना = योग्यता को मानना
भारतीय सैनिकों का लोहा पड़ोसी मुल्क के सैनिक भी मानते हैं।

(छ) ईंट से ईंट बजाना = करारा जवाब देना
क्रिकेट मैच में भारतीय टीम ने पाकिस्तानी टीम की ईंट से ईंट बजा दी।

(ज) नाक में दम करना = परेशान करना

बच्चों ने अध्यापक की नाक में दम कर रखा है।

(झ) घर–घाट एक करना = कठिन परिश्रम करना

साहिल ने अपने को ऊँचाई तक ले जाने के लिए घर–घाट एक कर दिया।

उ०6. आजाद ने मोटर चलाना सीखा।

आजाद ने मोटर लाइसेंस बनवाया।

वे वीरगति को प्राप्त हुये थे।

क्रान्तिकारियों की गुप्त सभाएँ होने लगीं।

अध्याय 3
फूलों का राजा

पाठ-बोध

उ०1. (क) गुलाब फूलों का राजा है क्योंकि वह जहाँ भी हो वहाँ की शान बढ़ाता है।

(ख) ब्रह्मा जी ने सभी फूलों को रंग देने के लिए फूलों की सभा बुलाई थी।

(ग) गुलाब जंगली फूलों के साथ बैठ गया क्योंकि ओर कहीं उसको जगह नहीं मिली।

(घ) गुलाब को सब अपने से दूर हटाना चाहते थे क्योंकि सभी को गुलाब की सुंदरता से जलन हो रही थी।

(ङ) मानवरूपी फूल में खुशबू स्वयं व्यक्ति ही भरता है।

उ०2. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (ii)

उ०3. (क) संसार, फूलों, सफेद (ख) फूलों

(ग) खुशबू, प्रफुल्लित (घ) पीला, सूरजमुखी

उ०4. (क) गेंदे ने ब्रह्मा से।

क्योंकि एक जैसे रंग के कारण पहचानना मुश्किल होता था।

(ख) ब्रह्मा ने गुलाब से

क्योंकि गुलाब को कोई भी अपने पास जगह नहीं दे रहा था।

(ग) ब्रह्मा ने गुलाब से

क्योंकि गुलाब हर रंग में खुबसूरत लग रहा था और उसकी गंध का कोई सानी नहीं था।

उ०5. (क) कहानी के अनुसार पहले फूलों का रंग सफेद होता था।

(ख) सफेद फूलों को देखकर ब्रह्मा जी ने सोचा कि क्यों न सुंदर-सुंदर रंगों वाले फूल बनाऊँ और अपने चारों ओर की प्राकृतिक छटा को अनूठा रूप दूँ।

(ग) कश्मीर की हसीन वादियों में दूर-दूर तक फैली केसर की क्यारियों में सभा प्रारंभ हुई।

(घ) ब्रह्मा जी ने उसे जंगली फूलों के साथ बैठने का इशारा किया।

(ङ) गेंदा और सूरजमुखी ने पीला रंग लिया।

(च) सर्वसम्मति से गुलाब को राजा चुना गया क्योंकि हर रंग में खूबसूरत लगता रहा और उसकी गंध का कोई सानी नहीं था।

(छ) मानव स्वयं अपने व्यक्तिव की खुशबू दुनिया में भर सकता है और समाज रूपी उपवन को अपने नैतिक गुणों द्वारा महका सकता है।

व्याकरण-बोध

उ०1. कहानी = लेख — सफेद = श्वेत
परेशानी = दिक्कत — सौंदर्य = सुन्दरता
दृष्टि = नजर — राजा = नृप

उ०2. (क) कुल (ख) पवन (ग) आकार

उ०3. सफेद फूल = सफेद — हसीन वादियाँ = हसीन
स्नेहमयी दृष्टि = स्नेहमयी — प्रफुल्लित मन = प्रफुल्लित
काला रंग = काला — खुशबूदार फूल = खुशबूदार
महकता उपवन = महकता — अद्भुत रचना = अद्भुत

उ०4. (क) अतिरिक्त = कक्षा में अतिरिक्त दो विद्यार्थी और हैं।
(ख) स्नेहमयी = माँ की दृष्टि स्नेहमयी होती है।
(ग) वनस्पति = वनस्पति जीवन को मानव नष्ट कर रहा है।
(घ) मनमोहक = उपवन का दृश्य मनमोहक है।
(ङ) सानी = गुलाब की गंध का कोई सानी नहीं था।
(च) प्रकृति = प्रकृति की हर एक चीज उपयोगी है।

अध्याय 4

ध्रुव की तपस्या

पाठ-बोध

उ०1. (क) राजा उत्तानपाद की दो रानियाँ थीं।

(ख) सुरूचि ने राजा से वचन लिया था कि उसका पुत्र ही गद्दी का अधिकारी होगा।

(ग) सुरूचि के द्वारा अपमानित ध्रुव ने तपस्या करके ईश्वर को प्रसन्न किया।

(घ) अंत में ध्रुव राजा बना।

उ०2. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (ii)

उ०3. (क) ध्रुव (ख) सुरूचि (ग) राजा

(घ) आँखें (ङ) गरीब

उ०4. (क) राजा उत्तानपाद की दो रानियाँ थीं। राजा छोटी रानी सुरुचि को बहुत प्यार करता था। उसकी हर बात मानता और वह जैसा कहती, करने को तैयार हो जाता था। सुमति बेचारी मन-मारे महल में पड़ी रहती थी और सुरुचि उसका जो अपमान करती, वह उसे सहन करती थी।

सुरुचि ने राजा उत्तानपाद से सुमति की इतनी बुराई की कि उसे महल से निकलवा दिया। राजा ने उसके लिए एक अलग निवास बनवा दिया और वह अपने पुत्र के साथ अकेली उसमें रहने लगी।

(ख) ध्रुव को अपने घर का त्याग भगवान की खोज के लिए करना पड़ा।

(ग) घर से निकलकर ध्रुव भगवान की खोज में एक जगह से दूसरी जगह जाता रहा।

(घ) बालक ध्रुव जंगल में और उसके पार भी घूमता-फिरा पर उसको भगवान कहीं नहीं मिले। आखिर थक-हारकर वह एक दिन आँखें बंद करके एक पेड़ के नीचे बैठ गया। उसने मन में यह निश्चय कर लिया था कि जब तक भगवान खुद नहीं आएँगे, वह आँखें नहीं खोलेगा।

(ङ) एक दिन वह रोज की तरह आँखें बंद किए बैठा था, तभी किसी ने उसके पास आकर कहा, ''मैं भगवान हूँ, आँखें खोलो।'' ध्रुव ने खुश होकर आँखें खोल दीं।

(च) आँखें खुलने के बाद ध्रुव गरीब मेहनत करने वालों की सेवा का काम शुरू कर दिया। वह उनकी बस्ती में जाकर उन्हें सुख पहुँचाने के काम करता। कोई बीमार हो तो रात-दिन उसके पास बैठकर उसकी सेवा करता था।

(छ) लोग सोचने लगे कि उनका चुना हुआ कोई व्यक्ति राजा क्यों न बने। राज्य में जगह-जगह से आवाजें उठने लगीं कि वे नहीं चाहते कि उनके ऊपर कोई राजा थोप दिया जाए। वे अपना राजा खुद चुनना चाहते थे।

(ज) अधिकतर लोगों ने ध्रुव के पक्ष में मत दिया। ध्रुव राजा चुन लिया गया।

उ०5. स्वयं कीजिए।

व्याकरण-बोध

उ०1.	इच्छा	= च्छ	=	तुच्छ	स्वच्छ	कच्छ
	प्रसन्न	= न्न	=	छिन्न	भिन्न	अभिन्न
	व्यक्ति	= क्त	=	वक्त	रक्त	व्यक्त
	बच्चा	= च्च	=	कच्चा	सच्चा	उच्च
	बस्ती	= स्त	=	व्यस्त	अभ्यस्त	रस्ता
उ०2.	(क)	क्रम	=	भ्रम	उग्र	शुक्र
	(ख)	रूप	=	पुरूष	रूद्र	रूम
	(ग)	निर्बल	=	आशीर्वाद	सर्वस्व	धर्म
	(घ)	कृषक	=	गृह	कृपा	कृमिक

उ०3. (क) ध्रुव = ध्रुव तारा अडिग है।

(ख) अपमानित = ध्रुव अपमानित होने पर वन में तप के लिए चले गया।

(ग) दर्शन = ईश्वर के दर्शन असंभव हैं।

(घ) परलोक = परलोक में हमारे पूर्वज रहते हैं।

(ङ) लोकप्रिय = लोकप्रिय त्योहारों को धूमधाम से मनाया जाता है।

अध्याय 5
भारत की सांस्कृतिक एकता

पाठ-बोध

उ०1. (क) मतभेद होना। (ख) भारत की सांस्कृतिक एकता।
(ग) भगवान बुद्ध। (घ) बौद्ध धर्म से।

उ०2. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (ii)

उ०3. (क) हमारे भारतीय धर्मों में भेद होते हुए भी उनमें एक सांस्कृतिक एकता है, जो उनके अवरोध की परिचायक है। वही त्याग और तप एवं मध्यम मार्ग की संयममयी भावना हिंदू, बौद्ध, जैन और सिख संप्रदायों में समान रूप से विद्यमान् है। एक धर्म के आराध्य दूसरे धर्म के महापुरुष के रूप में स्वीकार किए गए हैं। जैन धर्म-ग्रंथों में भगवान् राम और कृष्ण को तीर्थंकर नहीं तो उनसे एक श्रेणी नीचे का स्थान मिला है। अन्य देवी-देवताओं को भी उनके देव मंडल में स्थान मिला है। भारत में उद्भूत प्रायः सभी धर्म आवागमन में विश्वास करते हैं।

मुसलमान और ईसाई धर्म एशियाई धर्म होने के कारण भारतीय धर्मों से बहुत कुछ समानता रखते हैं। यूरोप से भी पहले ईसाई धर्म को दक्षिण भारत में स्थान मिला है। ईसाइयों की 'क्षमा और दया' बौद्ध धर्म से मिलती-जुलती है। मैं यह नहीं कहता कि किसने किससे लिया, परंतु इन मौखिक सिद्धांतों में हिंदू, बौद्ध और ईसाई धर्मों में समानता है।

(ख) देश राष्ट्रीयता का एक आवश्यक उपकरण है। प्राचीनकाल में राष्ट्रीयता की धारा अबाधित तो नहीं रही है, आंतरिक द्वेष कभी- कभी प्रबल हो उठे हैं, किंतु भारतवासी एकछत्र सार्वभौम राज्य से अपरिचित न थे। राजसूर्य, अश्वमेध आदि यज्ञ ऐसे ही राज्य की स्थापना के ध्येय से किए जाते थे। इनके द्वारा टूटी हुई राष्ट्रीय एकता जुड़कर अविरल धारा का रूप धारण कर लेती थी।

(ग) शिवभक्त ठेठ उत्तर की गंगोत्री से जाह्नवी–जल लाकर दक्षिणी सीमा के रामेश्वरम् में महादेव का अभिषेक करते हैं। उत्तर में बदरी–केदार, दक्षिण में रामेश्वरम्, पूर्व में जगन्नाथ और पश्चिम में द्वारिकापुरी के तीर्थाटन से भारत की चारों दिशाओं की पूजा हो जाती है।

(घ) मुसलमानों और ईसाइयों ने यहाँ की संस्कृति को प्रभावित किया है, वे यहाँ की संस्कृति से प्रभावित हुए हैं। भारतीय सूफी कवियों ने वेदांत की भावभूमि को अपनाया है और उनके ग्रंथों में हिंदू परंपराओं, कथाओं, विचारों, देवी–देवताओं और प्रतीकों के समावेश हुए हैं।

(ङ) उत्तर भारत की प्रायः सभी भाषाएँ संस्कृत से प्रभावित हुई हैं। उन्होंने भी थोड़ी–बहुत मात्रा में संस्कृत की शब्दावली ग्रहण की, किसी ने थोड़ा तो किसी ने बहुत। उर्दू को छोड़कर प्रायः सभी भाषाओं की वर्णमाला एक नहीं तो एक–सी है। केवल लिपि का भेद है। संस्कृत की परिनिष्ठित लिपि होने के कारण देवनागरी प्रायः सभी प्रांतों में पहचानी जाती है। भाषा की जमीन और व्याकरण प्रायः एक–से हैं। बेल–बूटे फारसी–अरबी के हैं।

व्याकरण-बोध

उ०1. श्रेणी = श्रेणियाँ   कविता = कविताएँ
संस्कृति = संस्कृतियाँ   इकाई = इकाईयाँ
नदी = नदियाँ   भाषा = भाषाएँ

उ०2. आराध्य = ईश्वर   भगवान
राष्ट्र = देश   वतन
अवयव = भाग   अंश
मनुष्य = नर   मानव

उ०3. स्वार्थ = निस्वार्थ   प्राचीन = नवीन
दरिद्र = अमीर   एकता = अनेकता
स्मरण = भूलना   ह्रास = वृद्धि

अध्याय 6

जब मैंने पहली पुस्तक खरीदी

पाठ-बोध

उ०1. (क) लेखक को पढ़ने की चाह लग गई थी।

(ख) आर्य समाज के सुधारवादी आंदोलन का उद्देश्य रूढ़ियों का अंत करना था।

(ग) धर्मवीर भारती की लाइब्रेरी की शुरूआत पाँचवीं कक्षा में प्रथम आने पर पुरस्कार में मिली दो पुस्तकों से हुई।

(घ) शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की देवदास।

उ०2. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (i)

उ०3. (क) आर्य समाज, सुधारवादी (ख) आर्थिक कष्टों

(ग) पाखंड, अदम्य (घ) अंग्रेजी

(ङ) लेखक सहगल का एक गाना था।

उ०4. (क) लेखक के माता-पिता आर्य समाज के सुधारवादी आंदोलन से जुड़े हुए थे।

(ख) लेखक के घर में 'आर्यमित्र, 'साप्ताहिक', 'वेदोदय', 'सरस्वती', 'गृहिणी' और दो बाल पत्रिकाएँ 'बालसखा' और 'चमचम' आदि। पत्र व पत्रिकाएँ आती थीं।

(ग) लेखक ने स्वामी दयानंद जी के विषय में लिखा है कि वे तत्कालीन पाखंडों के विरूद्ध अदम्य साहस दिखाने वाले अद्भुत व्यक्ति थे। कितनी ही रोमांचक घटनाएँ थीं, उनके जीवन की जो मुझे बहुत प्रभावित करती थीं।

(घ) लेखक को स्कूल से इनाम में दो अंग्रेजी किताबें मिली थीं। इन दो किताबों ने एक नई दुनिया का द्वार मेरे लिए खोल दिया। पक्षियों से भरा आकाश और रहस्यों से भरा समुद्र। इसके बाद किताबें पढ़ने का शौक लग गया।

(ङ) देवदास फिल्म का गाना गाते समय लेखक की आँखों में आँसू आ जाते थे क्योंकि सच में उन दिनों उनके दिन कष्टपूर्ण थे।

(च) लेखक की निजी लाइब्रेरी की पहली पुस्तक देवदास थी।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) माँ **ने** स्त्री-शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी।

(ख) हम लोग बड़े आर्थिक कष्टों **से** गुजर रहे थे।

(ग) यह सब मेरे बालमन **को** बहुत रोमांचित करता।

(घ) उन्होंने मुझे लोकनाथ **की** दुकान **से** अनार का ताजा शरबत मिट्टी के कुल्हड़ में पिलाया।

(ङ) माँ **की** आँखों **में** आँसू आ गए।

उ०1.

बचपन	=	बाल्यकाल	पिता	=	बाप
प्रकाश	=	रोशनी	जीवन	=	आयु
परिश्रम	=	मेहनत	बाग	=	उपवन
संकट	=	कष्ट	निजी	=	व्यक्तिगत

उ०3.

आर्थिक कष्ट	=	आर्थिक	सुंदर कन्या	=	सुंदर
रोचक शैली	=	रोचक	अद्‌भुत व्यक्ति	=	अद्‌भुत
गलत संगति	=	गलत	पाँचवाँ दर्जा	=	पाँचवाँ
घोर विरोधी	=	घोर	पुराना ग्राहक	=	पुराना

अध्याय 7
देशप्रेम

पाठ-बोध

उ०1. (क) जापान को उगते सूर्य का देश कहा जाता है।
(ख) देशभक्ति
(ग) देशभक्ति की भावना से कार्य कर देश को महान बनाना चाहिए।

उ०2. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (iii)
(घ) (iii)

उ०3. (क) उगते हुए सूरज (ख) विकसित (ग) धर्म
(घ) देखकर (ङ) बदनामी

उ०4. (क) सत्य (ख) सत्य (ग) सत्य
(घ) असत्य (ङ) सत्य

उ०5. (क) जापान एक छोटा-सा देश है। किंतु उन्नति और खुशहाली में बड़े-बड़े देश भी इससे कोसों दूर हैं। इसलिए 'एशिया महाद्वीप की शान' कहें तो कोई बड़ी बात नहीं होगी।
(ख) जापानी लोग देश सेवा को अपना प्रथम कर्तव्य समझते हैं।
(ग) विदेशी व्यक्ति जापानियों का अपने देश के लिए प्रेम देखकर भौंचक्का रह गया।
(घ) पुस्तक विक्रेता ने छात्र को पुरानी पुस्तक नहीं दी क्योंकि वह थोड़े-से लालच से अपने देश की बदनामी हो, यह कभी सहन नहीं कर सकता।''
(ङ) जब देशवासियों के मन में अपने देश के प्रति प्रेमभाव उत्पन्न हो जाता है तो उनका देश स्वर्ग के समान बन जाता है।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) प्रज्ञा ने <u>आम खाया</u>।
(ख) बच्चे ने <u>नाव बनाई</u>।
(ग) श्री राम ने <u>रावण को मारा</u>।
(घ) धोबिन ने <u>कपड़े धोए</u>।
(ङ) मधुर ने <u>गेंद को उठाया</u>।

उ०1.	उदय	अस्त	तुच्छ	उच्च
	उन्नति	अवनति	इच्छा	अनिच्छा
	देशप्रेमी	देशद्रोही	प्रेम	नफरत
उ०2.	राष्ट्र	देश	उन्नति	तरक्की
	प्रेम	प्यार	कष्ट	मुश्किल
	आक्रमण	हमला	पुरानी	प्राचीन

उ०3. (क) मेरे पास छोटी–सी कार है।

(ख) हमारा बड़ा–सा घर है।

(ग) नाविक के पास छोटी–सी नाव है।

(घ) गाँव में बड़ी सी हवेली है।

अध्याय 8

यह लघु सरिता का बहता जल

कविता-बोध

उ०1. (क) हिमगिरि की बर्फ

(ख) यह दूध सा निर्मल तथा स्वच्छ है।

(ग) ऊँचे शिखरों से उतरकर भूतल पर आता है।

(घ) जीवों को जीवन देता है।

उ०2. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (i)

उ०3. हिम के पत्थर वो पिघल-पिघल,
बन गए धारा का वारि विमल।
सुख पाता जिससे अधिक विकल,
पी-पीकर अंजलि भर मृदुजल।
नित जलकर भी कितना शीतल,
यह लघु सरिता का बहता जल ।।

उ०4. (क) कवि सरिता के जीवनकाल की कई व्यवस्थाओं का बखान करते हुए कहते हैं कि सरिता ऊँचे-ऊँचे पर्वतों से उतरी है वह सीधे चट्टानों पर गिरती है और फिर धीमी गति से कंकड़ पत्थरों में बहती चलती है। ये सफर सरिता का रात-दिन चलता रहता है।

(ख) कवि कहते हैं कि नदियों का जल इतना कोमल व स्नेहपूर्ण है जैसे कि माता का हृदय होता है। वह अपने जल को इस्तेमाल करने वाले हर व्यक्ति व पशु का स्वागत करती है। उसका हृदय हर किसी को स्वीकार करता है वह किसी के प्रति द्वेष नहीं रखती। इसका यह शीतल तथा करूण जल युगों-युगों तक बहता रहता है।

उ०5. (क) सरिता का जल शीतल व निर्मल है।

(ख) वह जल वसुधा का अंतःस्थल धोने के लिए ऊँचे शिखरों से गिरकर आता है तथा भूमि को निर्मल कर देता है।

(ग) हिम पिघलकर सरिता का निर्माण करते हैं।

(घ) सरिता के जल को अंजलि में भकर पीने से बेचैन को सुख प्राप्त होता है।

(ङ) 'रे जननी का अंत:स्थल' इस पंक्ति में 'जननी' सरिता को कहा गया है, क्योंकि वह वर्षों तक लगातार बहकर सबका पालन करती है।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) अनुप्रास अलंकार –

गिर–गिर–गिरि	कितना शीतल कितना निर्मल
	हिमगिरि के हिम

(ख) पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार–

निकल–निकल	उतर–उतर
कल–कल	पिघल–पिघल
छल–छल	युग–युग

उ०2. (क) मेल — मित्रता

राम व श्याम में बहुत अच्छा मेल है।

मैल — गन्दगी

उसके कपड़ों में बहुत अधिक मैल है।

(ख) में — अन्दर

वह कक्षा में बैठा है।

मैं — मेरा या स्वयं

मैं आज जल्दी उठ गया।

(ग) जाल — धागों का जाल

मछुआरे ने मछली पकड़ने के लिए जाल बिछाया।

जाला — मकड़ी द्वारा बनाया गया धागों का जाल

मकड़ी का जाला घर के कोने में लगा है।

उ०3.

लघु	दीर्घ	निर्मल	मलिन
मृदुल	कठोर	रजनी	दिल
शिखर	आधार	शीतल	उष्ण
धरती	आकाश	करुणा	क्रूरता

उ०4. वसुधा	–	धरा	भूमि
गंगा	–	सुरसरि	भागीरथी
जननी	–	माँ	माता
सरिता	–	नदी	तरंगिणी
वत्सल	–	प्रेमी	दयालु
मृदु	–	कोमल	नरम
करुणा	–	दया	ममता
निर्मल	–	स्वच्छ	पवित्र
जल	–	पानी	नीर
रजनी	–	रात्रि	निशा

अध्याय 9

भारत की कोकिला सरोजिनी नायडू

पाठ-बोध

उ०1. (क) श्रीमती सरोजिनी नायडू ने अंग्रेजी भाषा में कविताएँ लिखी थीं।
(ख) सरोजिनी का परिवार ब्रह्मसमाज से प्रभावित था।
(ग) कांग्रेस ने इन्हें कानपुर-अधिवेशन का अध्यक्ष 1925 में चुना।
(घ) इन्होंने अपना पार्थिव शरीर 2 मार्च, 1949 में छोड़ा।

उ०2. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (ii)

उ०3. (क) राष्ट्रीय संघर्ष (ख) स्वतंत्रता प्राप्ति (ग) भारत छोड़ो
(घ) आदर-विहीन

उ०4. (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य
(घ) असत्य (ङ) सत्य

उ०5. (क) सरोजिनी नायडू का जन्म 13 फरवरी, 1879 को पूर्वी बंगाल के ब्रह्मनगर नामक गाँव में हुआ था।
(ख) गाँधी जी ने सरोजिनी को ऐसा तब कहा कि तुम अवश्य ही श्रीमती नायडू हो। सरोजिनी नायडू एक पुराने ढंग के मकान की सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर गईं, और एक छोटे आदमी का सजीव चित्र देखा। उसका सिर छिपा हुआ था, वह फर्श पर जेल के काले कंबल पर बैठा जेल के ही लकड़ी के कटोरे में टमाटर और जैतून के तेल का भोजन कर रहा था। उसके आसपास भुनी हुई मूंगफली और केले के आटे से बने बेस्वाद बिस्कुटों के पिचके हुए कुछ डिब्बे रखे थे। मैं उस प्रसिद्ध नेता के मजेदार दर्शन पाकर अपने आप हँस पड़ी जिसका नाम हमारे देश के घर-घर में लिया जाने लगा था।
(ग) नेहरू जी ने लिखा है, ''मैं उन दिनों सरोजिनी नायडू के कई धारा-प्रवाह भाषणों से प्रभावित हुआ था। वे राष्ट्रीयता और देश भक्ति से पूरी भरी थीं।''
(घ) श्रीमती नायडू की काव्य-कृतियों के नाम- गोल्डन थ्रैशेल्ड, दि वर्ड ऑफ टाइम, दि ब्रोकन विंग। जब सरोजिनी का कंठ अत्यंत

मधुर था। वे जब कविता पाठ करतीं तो उनकी संगीतमयी मधुर ध्वनि से श्रोता मंत्रमुग्ध हो उठते थे। उनकी कविता की भाषा में भी अद्‌भुत लालित्य था।

(ङ) 30 जनवरी, 1948 को दिल्ली में राष्ट्रपिता की हत्या कर दी गई। इस वज्राघात से सरोजिनी नायडू मर्माहत हो उठीं। उनके नेता, सहयोगी और पथ-प्रदर्शक जा चुके थे। यह आघात उनके लिए बड़ा भयानक सिद्‌ध हुआ। धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य बिगड़ता गया। 1 मार्च, 1948 की रात को वे अपनी नर्स से गाना सुनते हुए सोईं, तो फिर उठ नहीं सकीं। 2 मार्च को प्रातः साढ़े तीन बजे उनकी आत्मा ने पार्थिव शरीर को त्याग दिया।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) साप्ताहिक (ख) रोगी (ग) उपर्युक्त
(घ) अनाथ (ङ) दुर्गम

उ०2. (क) उसके सोने का समय था।
(ख) मेरे न जाने का समय है।
(ग) उसके न बैठने का समय है।
(घ) बच्चे के खेलने का समय है।
(ङ) अतुल के रोने का समय है।

उ०3. परतिष्ठा = प्रतिष्ठा मूक्त = मुक्त
अदभुत = अद्‌भुत वीभूषित = विभूषित

अध्याय 10

क्या निराश हुआ जाए

पाठ-बोध

उ०1. (क) समाज को सुचारू रूप से चलाने के लिए मनुष्य ने सामाजिक नियम बनाए हैं।

(ख) सामाजिक नियम टूटने पर मनुष्य हताश हो जाता है।

(ग) यदि समाज को पूर्णरूप से दोषमुक्त मान लिया गया तो जीवन कष्टकर हो जायेगा।

उ०2. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (ii)

उ०3. (क) असत्य (ख) असत्य (ग) असत्य

(घ) सत्य

उ०4. (क) मनुष्य जब अधिक धन की लालसा करता है तब वह अपने आदर्शों को ताक पर रखकर सिर्फ अपने फायदे के बारे में सोचता है। तब कोई आदर्श उसे रोक नहीं सकता।

(ख) धर्म कानून से बड़ी चीज है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं, लेकिन नष्ट नहीं हुए। आज भी झूठ और चोरी को गलत समझा जाता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझा जाता है।

(ग) जो भारतवर्ष में आजकल ईमानदारी का मुखौटा लगाकर लोगों को लूट रहे हैं उन लोगों को कभी न कभी कानून को जवाब देना पड़ेगा। भारतवर्ष को पहले जैसा बनाने के लिए काफी संघर्ष करना होगा और इस संभावना के कभी न कभी तो हम पूरी कर ही देंगे।

उ०5. (क) समाचार-पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार की खबरों से समाचार भरे रहते हैं। आरोप-प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है, देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है। हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता, जो कुछ भी

करेगा, उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिए जाएँगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा। दोष किसमें नहीं होते? यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम।

(ख) इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं, और झूठ तथा फरेब का रोजगार करने वाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है।

(ग) लेखक ने बताया कि एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस के बजाय सौ रुपए का नोट दिया और मैं जल्दी-जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकंड क्लास के डिब्बे के हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपए रख दिए और बोला, ‘‘बहुत बड़ी गलती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।'' उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया। घटना से लेखक को लगता है कि मनुष्यता अभी समाप्त नहीं हुई।

(घ) लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विकार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत निकृष्ट आचरण है।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) उत्कृष्ट (ख) समापन (ग) अविश्वास

(ग) प्रतिकर्षण

उ०2. (क) मुझसे पत्र नहीं लिखा गया।

(ख) मैंने यह पत्र नहीं पढ़ा।

(ग) प्रातःकाल शैलेश का उठना नहीं हो सकता।

(घ) मैंने पढ़ाई नहीं की।

(ङ) धूप में चलना नहीं हो सकता।

(च) प्रभा के द्वारा कपड़े धोने का कार्य किया जाता है।

(छ) दौड़ने का कार्य उससे नहीं किया जाता है।

(ज) चापलूसी का कार्य राजेश द्वारा किया जाता है।

(झ) किताब पढ़ने का कार्य नकल द्वारा किया जाता है।

(ञ) अमर के द्वारा नहीं चला जाता।

अध्याय 11

कसौटी

पाठ-बोध

उ०1. (क) फालू का असली नाम अशोक है।

(ख) मसूरी उत्तराखंड राज्य में पहाड़ों पर स्थित है।

(ग) हाँ, सुनार कसौटी पर सोने को परखता है।

उ०2. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (iii)

उ०3. (क) श्रीमती विद्यावती कौशल का छोटा लड़का है फालू। यह कोई उसका नाम नहीं। नाम तो है अशोक और कहते हैं उसे फालू, तो यह हुआ उपनाम। अवस्था है पाँच वर्ष, पर वह अकेला ही बहुत कुछ है- बालक भी, बूढ़ा सलाहकार भी, तरुण सेवक भी।

(ख) बच्चों के खेलघर के पास लेखक ने देखा कि एक नौकर किसी धनी परिवार के दो बालकों को लिए खड़ा है। बालक 8-10 वर्ष के, स्वस्थ, मोटे-ताजे। नौकर उनसे कह रहा है, "जाओ, खेलघर में झूलो-खेलो, पर वे नहीं जाते।

(ग) नौकर की ललकार पर लेखक ने बढ़ावा देते हुए कहा, "फालू, हम घूमने जा रहे हैं, तू जा झूल-खेल, हम लौटते समय रात में तुझे ले लेंगे।" सुनते ही फालू दौड़ गया और लंबे तख्ते पर उछलकर जा चढ़ा।

(घ) खेलघर का मुंशी भाई बोला, "आप बच्चे को छोड़ गए, यह नौ बजे तक खेलता रहा, पर जब मैंने खेलघर बंद किया और आप नहीं आए तो मैंने सोचा कि अब यह जरूर रोएगा। आपकी बातें मैंने सुनी थीं, इसलिए इसे बताए बिना मैं छिपकर बैठ गया कि देखूँ, अब भी घबराता है या नहीं। यह नहीं घबराया और खेलता रहा। सचमुच बाबू जी, यह तो शेर बच्चा है।"

(ङ) अब फालू हर काम प्रमोद पर टालता है, कन्नी काट जाता है जैसे- बहरा ही हो गया है। अब निगाह काम पर नहीं जाती, प्रमोद पर जाती है कि काम को प्रमोद क्यों न करे, वही क्यों करे?

(च) जिस काम को एक आदमी करता है, उसे दो करने लगें तो वह पहले से जल्दी और सुंदर होना चाहिए, पर होता नहीं ऐसा। क्योंकि अब वे काम को एक-दूसरे पर टाल देते हैं।

(छ) नागरिकों में सामूहिक उत्तरदायित्व का बोध किसी भी राष्ट्र के जीवित होने की सर्वोत्तम कसौटी है।

व्याकरण-बोध

उ०1.

	क्रिया-विशेषण	संबंध बोधक
(क)		के अंदर
(ख)	पहले	
(ग)	बाहर	
(घ)		के नीचे
(ङ)	अंदर, भीतर	

उ०2.

पुष्पित	= पुष्प+इत	भ्रमित	= भ्रम+इत
धार्मिक	= धर्म+एक	खंडित	= खंड+इत
पल्लवित	= पल्लव+इत	गुंजित	= गुंज+इत

उ०3.

(क) उत्साह = त्यौहार अपने साथ उत्साह लेकर आते हैं।

(ख) झिझक = सेवकराम किसी कार्य को करने में झिझक महसूस नहीं करते थे।

(ग) डरपोक = सेवकराम डरपोक व्यक्ति नहीं थे।

(घ) सद्‌भावना = सबके लिए सद्‌भावना रखनी चाहिए।

(ङ) संदेश = बच्चों को अच्छाई का संदेश देना चाहिए।

(च) स्वतंत्र = आज हम स्वतंत्र भारत में रहते हैं।

(छ) अपमान = किसी का अपमान करना गलत भाव है।

(ज) सामूहिक = कल एक सामूहिक नृत्य का आयोजन होगा।

(झ) व्यवसाय = सेवक राम का व्यवसाय बहुत अच्छा चल रहा है।

(ञ) जिम्मेदारी = जिम्मेदारी निभाना सबके बस की बात नहीं होती है।

अध्याय 12

सत्साहस

पाठ-बोध

उ०2. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (iii)

उ०3. (क) साहसी (ख) निर्भीकता (ग) शूरवीरों
(घ) गुप्त (ङ) सत्साहस

उ०4. (क) (i) युवक एक मुसलमान व्यक्ति था। उसने बादशाह के दरबार में बहुत से लोगों को मार दिया था।

(ii) लेखक युवक के कार्य को प्रशंसनीय नहीं मानता क्योंकि क्रोधांध होकर स्वार्थवश ऐसा साहस करने से उसका यह कार्य किसी प्रकार प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता।

(iii) ऐसे साहस को लेखक ने नीच की श्रेणी में रखा है।

(ख) (i) बुद्धन मारवाड़ के मौरूदा गाँव का जमींदार था।

(ii) किसी झगड़े के कारण

(iii) बुद्धन ने अपने सैनिकों के साथ मारवाड़ के मौरूदा गाँव में कूच किया।

उ०5. काम छोटा हो या बड़ा, साहस के बिना वह पूरा नहीं हो सकता, क्योंकि आज तक जितने भी काम हुए हैं, सब साहस के द्वारा ही संपन्न हुए हैं। जिस व्यक्ति के अंदर साहस है वही अपने कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा कर सकता है, इसके अतिरिक्त साहस उच्च कोटि का, तथा जनहित में होना चाहिए, उसमें स्वार्थ नहीं होना चाहिए।

उ०6. (क) लेखक ने साहस के सच्चे प्रतीक के रूप में अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु, हनीवल और नेपोलियन, महाराणा प्रताप, शिवाजी, क्रॉमवेल, रणजीत सिंह और संग्राम सिंह का उल्लेख किया है।

(ख) राजपूतों ने घोड़ों पर सवार होकर अपने-अपने बरछे सँभाले और अकबर के सामने ही एक-दूसरे पर वार करने लगे। थोड़ी देर बाद वे एक-दूसरे पर बेतरह टूट पड़े। बादशाह के देखते-देखते दोनों घोड़ों से नीचे आ गिरे और मरकर ठंडे हो गए।

(ग) सर्वोच्च श्रेणी के साहस के लिए हृदय की पवित्रता तथा उदारता और चरित्र की दृढ़ता को होना आवश्यक है।

(घ) सत्साहसी के लिए स्वार्थ-त्याग भी परमावश्यक है। इस संसार में हजारों ऐसे काम हुए हैं, जिनको लोग बड़े उत्साह से कहते और सुनते हैं। उन कामों को वे बहुत अच्छा समझते हैं और उनके करने वालों को सराहते हैं। परंतु उन कामों में थोड़े से ही ऐसे हैं, जो स्वार्थ से खाली हों। समय पड़ने पर अपनी जान पर खेल जाने अथवा असामान्य साहस प्रकट करने में सदा आत्मोत्सर्ग नहीं होता, क्योंकि बहुधा ऐसा काम करने वाले यश के लोभ से, अपने नाम को कलंकित होने से बचाने के इरादे अथवा लूटमार के द्वारा धनोपार्जन करने की इच्छा से ऐसे मदांध हो जाया करते हैं कि वे अपने मतलब के लिए कठिन काम करने में संकोच नहीं करते।

(ङ) कर्तव्यपरायण से तात्पर्य है कि जो कुछ मैंने किया, वह केवल अपना कर्तव्य समझकर किया। कर्तव्यपरायण व्यक्ति के मन में अपने कर्तव्यों का पालन करने का साहस होना चाहिए।

व्याकरण-बोध

उ०2.	संसार	=	जग	दुनिया
	धरणी	=	भूमि	धरती
	निर्भीक	=	निडर	साहसी
	पवित्र	=	स्वच्छ	शुद्ध
	बलिष्ठ	=	बलवान	मजबूत

उ०3.

सम्मान	= सम्मानित		यश	=	यशस्वी
ज्ञान	= ज्ञानी		पवित्रता	=	पवित्र

अध्याय 13
थॉमस अल्वा एडीसन

पाठ-बोध

उ०1. (क) एडीसन का जन्म 11 फरवरी 1847 में अमेरिका के मीलान नामक स्थान पर हुआ था।

(ख) एडीसन के माता-पिता का नाम लैंसी इलियट और सेमुअल एडीसन था।

(ग) बचपन में एडीसन का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता था।

(घ) रेलगाड़ी में एडिसन द्वारा फास्फोरस से आग लग गई।

(ङ) बिजली का बल्ब, फोनोग्राम, माइक्रोफोन, लाउडस्पीकर आदि।

उ०2. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (i)

उ०3. (क) विज्ञान (ख) एडीसन (ग) स्वास्थ्य

(घ) कनपटी (ङ) तारघर

उ०4. (क) विज्ञान ने ही मनुष्य के जीवन को सुगम और सरल बना दिया है।

(ख) इनके पिता सेना में नौकरी करते थे। माता स्कूल में अध्यापिका का काम करते हुए वह घर का सारा काम-काज करती थीं।

(ग) एक दिन वह गाड़ी में परीक्षण कर रहा था कि अचानक फास्फोरस से आग लग गई। गार्ड ने गाड़ी रोककर आग बुझवाई। क्रोध में आकर गार्ड ने एडीसन की कनपटी पर एक घूँसा जमाया। इससे एडीसन कुछ बहरा हो गया।

(घ) उसने कंपनी के एक बिगड़े हुए यंत्र को बिल्कुल ठीक कर दिया। इस पर उसे सब कारीगरों का मुखिया बना दिया गया और अब उसे 300 डालर मासिक वेतन मिलने लगा।

(ङ) अक्टूबर, 1931 में इस महान् वैज्ञानिक का देहांत हो गया।

(च) यद्यपि एडीसन की जीवन-ज्योति बुझ गई, तथापि उसके द्वारा दिया गया बिजली का बल्ब आज भी जममगा रहा है।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) एडीसन (ख) गार्ड (ग) राष्ट्रपति

उ०2. देहांत = देह+अंत प्रोत्साहित = प्र+उत्साहित

सदुपयोग = सद+उपयोग प्रयोगशाला = प्रयोग+शाला

उ०3. भारी = हल्का

सरल = कठिन

अनेक = एक

विशेष = साधारण

आनंद = शोक

सम्मान = अपमान

उ०4. आधुनिक = आधुनिक काल में कई आविष्कार हो रहे हैं।

नियम = नियम का पालन करना विद्यार्थी का गुण है।

विदुषी = राधा एक विदुषी छात्रा है।

अद्‌भुत = संकेत में अद्‌भुत कला है।

परीक्षण = एडिसन ने कई परीक्षण किए।

अध्याय 14

मेरी माँ

पाठ-बोध

उ०1. (क) रामप्रसाद बिस्मिल की माँ को गृहकार्य में इनकी दादी जी की छोटी बहन ने शिक्षा दी।

(ख) बिस्मिल की माता का उनके लिए सबसे बड़ा आदेश था कि किसी की प्राणहानि न हो।

(ग) गुरु गोविन्द सिंह जी की पत्नी ने धर्म-रथार्थ अपने पुत्रों के बलिदान पर मिठाईयाँ बाँटी।

उ०2. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (iii)

उ०3. (क) हिंदी (ख) बहनों (ग) प्राणहानि

(घ) स्मरण (ङ) अधीर

उ०4. (क) (i) रामप्रसाद जी अपनी माता के विषय में।

(ii) मोहल्ले की संग-सहेलियाँ जो घर आ जाती थीं, उन्हीं में से जो शिक्षित थीं, माताजी उनसे अक्षर बोध करतीं।

(iii) बिस्मिल को उनकी माँ ने प्रेमपूर्वक शिक्षा दी।

(iv) मेहनत, संस्कृत/हिंदी, देखना।

(ख) (i) रामप्रसाद जी का

(ii) इनकी किसी भी भोग-विलास तथा ऐश्वर्य की इच्छा नहीं थी।

(iii) यह कि एक बार श्रद्धापूर्वक तुम्हारे चरणों की सेवा करके अपने जीवन को सफल बना लेता।

(iv) रामप्रसाद जी को ऐश्वर्य की इच्छा नहीं थी।
रामप्रसाद जी श्रद्धापूर्वक अपनी माता की सेवा करना चाहते थे।

उ०5. (क) भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के प्रसिद्ध क्रांतिकारियों में रामप्रसाद 'बिस्मिल' का नाम प्रमुख है। ये क्रांतिकारी होने के साथ-साथ साहित्यिक रुचि के धनी व सफल रचनाकार थे। 'निज जीवन'

इनकी प्रमुख रचना है। यह पत्र उन्होंने अपनी जन्मदात्री माता के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए लिखा था।

(ख) बिस्मिल की माँ का विवाह ग्यारह वर्ष की आयु में हो गया था।

(ग) गृहकार्य की शिक्षा बिस्मिल की दादीजी की छोटी बहिन ने दी और मौहल्ले की शिक्षित सहेलियों ने अक्षर बोध कराया।

(घ) बिस्मिल के क्रांतिकारी जीवन में उनकी माता ने उन्हें प्रेरणा दी। उन्हीं की प्रेरणा से वे 'भारतमाता' की सेवा में अपने जीवन को बलिवेदी की भेंट कर गया।

(ङ) गुरु गोविंद सिंह जी की धर्मपत्नी ने जब अपने पुत्रों की मृत्यु का संवाद सुना था तो बहुत हर्षित हुईं और गुरु के नाम पर धर्म-रक्षार्थ अपने पुत्रों के बलिदान पर मिठाइयाँ बाँटी थीं।

व्याकरण-बोध

उ०1. जो पढ़ना-लिखना न जाने	अशिक्षित
हिंदी भाषा की लिपि	देवनागरी
जन्म देने वाली	जन्मदात्री
जिसका वर्णन न किया जा सके	अवर्णनीय

उ०2. (क) आय = मेरी मासिक आय 5,000 रुपये है।

आयु = मेरी आयु 15 वर्ष है।

(ख) परिशोध = वैज्ञानिक हर समय किसी न किसी परिशोध में लगे रहते हैं।

प्रतिशोध = उसने प्रतिशोध लेने के लिए हर सीमा लांघ दी।

(ग) परिमाण = इस दूध का परिमाण एक लीटर है।

प्रमाण = यह मेरा जन्म प्रमाण पत्र है।

(घ) बलि = बलि देना बुरी प्रथा है।

बालि = राजा बालि एक महान् वीर योद्धा थे।

उ०3. ग्राम = ग्रामवासी ग्रामीण ग्रामशाला

शिक्षा	=	शिक्षार्थी	शिक्षक	शिक्षात्मक
ऋण	=	ऋणी	ऋणात्मक	ऋणार्थ
जीवन	=	जीवनात्मक	जीवनी	जीवनदायिनी

उ०4. (क) तो = वह समय से चला गया नहीं तो वह लेट हो जाता।

(ख) भी = वह दूर रहते हुए भी सबका ध्यान रखता है।

(ग) ही = मेहनत करने से ही सफलता मिलती है।

(घ) भर = वह दिनभर मेहनत करता है।

उ०5. (क) शिक्षा = सरकार ने सर्वशिक्षा अभियान चलाया है।

(ख) परिश्रम = परिश्रम सफलता की कुँजी है।

(ग) वार्तालाप = वार्तालाप करके हर समस्या का हल ढूँढ़ा जा सकता है।

(घ) जननी = धरती माता सबकी जननी है।

(ङ) परिणाम = यह काम मैंने किया है, इसका क्या परिणाम है।

(च) उन्नति = कठिन परिश्रम से ही उन्नति संभव है।

अध्याय 15

चेहरे का मुखौटा

पाठ-बोध

उ०1. (क) शर्माजी बहुत मिलनसार व बातूनी थे।

(ख) बैंक में।

(ग) शर्मा जी पर गबन का इल्जाम लगाकर नौकरी से निकाला गया।

(घ) लेखक को चिट्ठी शर्मा जी के लड़के ने क्षमा माँगने के लिए लिखी।

उ०2. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (iii)

उ०3. जिंदगी भार लगने लगती है जब कठिन परिश्रम करने पर भी किस्मत साथ नहीं देती। सुख के बजाय दुख व इल्जाम मिलते हैं तो जीवन के अनुभव कड़वे हो जाते हैं।

उ०4. (क) ''कभी हम किस्से लिखते थे और अब खुद एक किस्सा हो गए हैं।'' यह शर्मा जी ने कहा और इसका अभिप्राय यह है कि पहले वे अखबार के लिये लिखते थे परन्तु अब वे अपने जीवन के उतार-चढ़ाव में ऐसे फँसे हैं कि उनका जीवन बिखर गया है।

(ख) मुसीबतों में शर्मा जी गहरे दुःख को छुपाने की बनावटी हँसी हँसते थे।

(ग) शर्मा जी ने संस्था और परिवार में से परिवार को चुना। संस्था ने उन पर गबन का इल्जाम लगा दिया।

(घ) शर्मा जी जब अपनी बेटी की शादी की बात करने लगे तब लेखक को लगा कि वे पैसे माँगेंगे।

(ङ) नहीं, शर्मा जी ने लेखक से पैसे नहीं माँगे।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) और (ख) परंतु (ग) उसकी

(घ) अथवा

उ०2.	प्रकृति	= सृष्टि	कुल	= वंश
	रूचि	= पसंद		
उ०3.	अपमान	= सम्मान	साधारण	= विशेष
	सामने	= पीछे	बेहतर	= बुरा
	स्वीकृत	= अस्वीकृत	आशा	= निराशा
	झिझक	= निर्भीक	सीधी	= उल्टी
उ०4.	निशान	= चिन्ह	जरूर	= आवश्यक
	बिजली	= वृतिका	सहानुभूति	= दया
	अरसा	= वर्षो	शिष्टता	= सभ्यता
	मुश्किल	= कठिनाई	शालीनता	= विनम्रता

उ०5. (क) अधिकार = शिक्षा प्राप्त करना सबका अधिकार है।

(ख) आसार = बादल गरज रहे हैं, शायद वर्षा के आसार हैं।

(ग) आत्माभिमान = परिस्थिति कैसी भी हो हमें अपना आत्माभिमान बनाए रखना चाहिए।

(घ) इंतजाम = उसने कल की पार्टी के सारे इंतजाम कर लिए हैं।

उ०6. (क) कभी-कभी कठिन परिस्थितियों में टेढ़ी लकीर पर चलना पड़ता है।

(ख) उसने अपने बुरे समय में भी कभी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया।

(ग) मेरी गलतियों पर माँ मुझे खरी-खोटी सुना देती है।

(घ) जब मैंने प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया तो सबके होश उड़ गये।

अध्याय 16

महात्मा बुद्ध का प्रभाव

पाठ-बोध

उ०1. (क) हम सभी समय के अभाव की शिकायत करते हैं।
(ख) नेहरू जी प्रयत्न करते थे कि उनके कार्य में एक दिन की भी देरी न हो।
(ग) ये दोनों सत्य की महत्ता पर बहुत ध्यान देते थे।
(घ) समय धन समान है।

उ०2. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (i)

उ०3. (क) दायित्व (ख) इतनी व्यस्तता, दैनिक व्यायाम, मनोरंजन
(ग) फाइलों (घ) जीवनपर्यन्त (ङ) धन
(च) अपने

उ०4. (क) समय धन के समान होता है। अतः सावधानी और सतर्कता से हम अपने धन का तो हिसाब रखें ही पर समय के हिसाब में थोड़ी अधिक सावधानी बरतें। इसका कारण यह है कि धन तो आता-जाता रहता है, किंतु समय कभी वापस लौटकर नहीं आता। समय का हिसाब रखना जिस भी व्यक्ति ने सीख लिया, समझो उसने सुख-शांति के भंडार की कुंजी प्राप्त कर ली।
(ख) नेहरू जी अपने व्यस्त जीवन में से कुछ समय अपने दैनिक-व्यायाम और उसके साथ-साथ मनोरंजन के लिए भी निकाल लेते थे।
(ग) गाँधी जी के दर्शनार्थियों की भीड़ तो उन्हें सदैव ही घेरे रहती थी। उनसे मिलने के लिए देश-विदेश से भी कई लोग आते थे, जो उनसे पेचीदा मामलों पर विचार-विनिमय कराने के लिए आया करते थे। गाँधी जी को लेख-लिखने का बहुत शौक था, और वे लिखते भी थे। लेकिन फिर भी वे समय के बहुत पाबंद थे। वह कभी भी अपनी प्रार्थना-सभा के लिए देर से नहीं पहुँचे, इसके अलावा उनके प्रातःकालीन समय के भ्रमण में कोई बाधा नहीं आती थी। यही नहीं, दुनिया के कोने-कोने से भेजे गए पत्रों का उत्तर भी ज्यादातर वे अपने हाथों से ही लिखकर दिया करते थे।

(घ) यदि हम अनुकूल परिस्थितियों में ही अपने लिए समय नहीं निकल पाएँगे, तो फिर विषम परिस्थितियों में अपना संतुलन किस प्रकार से बनाए रखेंगे? अतः जीवन को सही अर्थों में सफल बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम किसी भी जरूरी कार्य को अनदेखा न करें या टालें नहीं। यह तब ही संभव है, जब हम अपने समय को सही प्रकार से व्यवस्थित कर लें।

(ङ) समय के अनुसार कार्य करने से हम अपने खेलकूद और व्यायाम आदि के लिए भी समय निकाल सकेंगे। समय तालिका बनाने के बाद उनका दृढ़ता और निष्ठा के साथ पालन करना भी आवश्यक है। निर्धारित समय पर निश्चित कार्य करने से ही जीवन में सफलता प्राप्त होती है।

(च) गाँधी जी और नेहरू जी इतने व्यस्त होते हुए भी अपना कार्य समय पर कर लेते थे क्योंकि वे अपना समय सोच-समझकर निश्चित करके और फिर उसका दृढ़तापूर्वक आचरण करें। ताकि अपने निश्चित कार्यों के अतिरिक्त और बहुत-से कार्यों के लिए हम समर्थ हो पाएँ।

(छ) विद्यार्थियों के लिए समय-पालन कई कारणों से अधिक महत्वपूर्ण है। विद्यार्थियों को एक लंबा जीवन जीना है और सफलता के ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों को छूना होता है। विद्यार्थी अपने विद्यार्थी जीवन में जो आदतें ग्रहण कर लेता है, वही आदतें उसके भावी जीवन का आधार बनती हैं। वे जीवन-पर्यंत बनी रहती हैं।

व्याकरण-बोध

उ०1.

व्यस्त	= खाली	आवश्यक	= अनावश्यक
स्वस्थ	= अस्वस्थ	निरंतर	= विराम
संतुलन	= असंतुलन	कुशल	= अकुशल
सावधानी	= असावधानी	आलस्य	= स्फूर्ति

उ०2. व्यस्त	=	अति सक्रिय	आवश्यक	=	जरूरी
जीवन	=	जिन्दगी	व्यायाम	=	कसरत
समय	=	वक्त	कोशिश	=	प्रयास
पत्र	=	संदेश	सफलता	=	कामयाबी
उ०3. सोसाइटियाँ	=	सोसाइटी	परिस्थितियाँ	=	परिस्थिति
सफलता	=	सफलताएँ	सावधानी	=	सावधानियाँ
समस्या	=	समस्याएँ	फाइलें	=	फाइल

उ०4. (क) में (ख) भी (ग) में
(घ) से (ङ) के (च) में
(छ) को

उ०5. (क) सतर्कता = वाहन चलाते समय सतर्कता भी आवश्यक है।
(ख) व्यक्तिगत = व्यक्तिगत बातें सबके सामने नहीं करनी चाहिए।
(ग) तालिका = विद्यालय में छात्रों की उपस्थिति की तालिका तैयार की गई।
(घ) निष्ठा = एक अच्छे कर्मचारी को अपने कार्य के प्रति निष्ठा बनाए रखनी चाहिए।
(ङ) विषम = इस समस्या का समाधान ढूँढ़ना विषम है।
(च) दायित्व = बच्चों को माता-पिता के प्रति अपने हर दायित्व को पूरा करना चाहिए।

अध्याय 17
युगावतार गाँधी

कविता-बोध

उ०1. (क) गाँधी जी को युगावतार कहा जाता है।

(ख) गाँधी जी के संकेत मात्र से ही लोग उनका अनुसरण करने लगते थे।

(ग) गाँधी जी को युग दृष्टा और युग सृष्टा इसलिए कहा है क्योंकि वे दूरदर्शी तथा नये युग का निर्माण करने वाले थे।

(घ) सोहनलाल द्विवेदी

उ०2. (क) (i) (ख) (ii)

उ०3. (क) जिसके शिर पर निज धारा हाथ,
उसके शिर-रक्षक कोटि हाथ।
जिस पर निज मस्तक झुका दिया,
झुक गए उसी पर कोटि माथ।।

(ख) बढ़ते ही जाते दिग्विजयी,
गढ़ते तुम अपना रामराज।
आत्माहुति के मणि-माणिक से,
मढ़ने जननी का स्वर्णताज।।

उ०4. हमारे मौन रहने के कारण यह युग भी मौन बना रहेगा। हमें अपने कर्म को संचित करके देश में नवजीवन की एक क्रान्ति लानी है क्योंकि जब हम उठेंगे तब ही युग को आगे बढ़ा पायेंगे अपने कर्मों को जगाकर भी धर्म को मजबूती से खड़ा कर पायेंगे।

उ०5. (क) जब हम खुद से अपनी मदद करेंगे और बढ़ेंगे तभी अपने युग को बदल सकेंगे।

(ख) धर्माडंबर को गाँधी जी ने पद-प्रहार ध्वस्त किया।

(ग) उस समय जनता अंग्रेजों की गुलामी में जकड़ी हुई थी। महात्मा गाँधी ने उनमें आशा का संचार किया।

(घ) गाँधी जी को कवि ने दिग्विजयी कहा है क्योंकि चारों दिशाओं में गाँधी जी की बात मानने वाले लोगों का अंबार था।

(ङ) इसका अर्थ है कि राजतंत्र की सभी नियमों का एक ढाँचा जिसका अब कोई नहीं है।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) दृग = उसके दृग बहुत सुन्दर हैं।

(ख) निज = हमें निज कार्यों पर ध्यान रखना चाहिए।

(ग) संचित = उसने बहुत सा धन संचित कर रखा है।

(घ) धरा = धरा हमारी जननी है।

(ङ) अभिनव = मेरा नाम अभिनव है।

(च) युग = द्वापर युग में श्रीकृष्ण ने जन्म लिया।

(छ) मानवता = मानवता सबसे बड़ा धर्म है।

(ज) सृजन = प्रकृति ने हमारा सृजन किया है।

(झ) स्वतंत्र = हम अब स्वतंत्र भारत में रहते हैं।

(ञ) आडंबर = हमें आस्था का आडंबर नहीं करना चाहिए।

उ०2.

पग	= रास्ता	कोटि	= करोड़
मस्तक	= माथा	कर्म	= काम
धरा	= धरती	जननी	= माँ
हाथ	= बाजू	निज	= अपना
दृष्टि	= नजर	प्रहार	= वार

उ०3.

डग	= मग	हाथ	= सत्य
बना	= तना	ध्वस्त	= व्यस्त

अध्याय 18

समाज के सच्चे शिक्षक

पाठ-बोध

उ०1. (क) सूट-बूट पहने हुए एक व्यक्ति कुली-कुली चिल्ला रहा था।

(ख) सामान उठाने वाले व्यक्ति ईश्वरचंद्र विद्यासागर थे।

(ग) ईश्वरचंद्र विद्यासागर को संस्कृत कॉलेज का अध्यक्ष बनाया गया।

(घ) समाज के हितों के लिए ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने बहु-पत्नी प्रथा, बाल विवाह, स्त्री शिक्षा तथा बाल विवाह पर फैली कुरीतियों पर कार्य किये।

उ०2. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (ii)

उ०3. (क) अनुशासन (ख) शिक्षा-संस्थाएँ (ग) पत्नी

(घ) तत्वबोधिनी पत्रिका (ङ) विवाहित

उ०4. (क) रेलवे स्टेशन पर साधारण-से दिखने वाले व्यक्ति ईश्वरचंद्र विद्यासागर थे।

(ख) ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने बंगाल में कई शिक्षा-संस्थाएँ खोलीं। सरकार ने आपकी कई योजनाएँ स्वीकार कीं और अनेक मामलों में सलाह भी मानी। सबसे अधिक क्रांतिकारी काम था- बालिकाओं के लिए विद्यालय खुलवाना। उन्हीं की कोशिश से कोलकाता में बेथून विद्यालय, मेदिनीपुर, बर्दवान, हुगली और नदिया जिले में पचास बालिका विद्यालयों की स्थापना हुई।

(ग) एक दिन ईश्वरचंद्र को एक बूढ़े प्रोफेसर साहब अपने घर ले गए। प्रोफेसर साहब की पहली पत्नी की मृत्यु हो चुकी थी। उन्होंने एक छोटी लड़की से विवाह कर लिया था। घर पहुँचकर जब विद्यासागर ने उस छोटी लड़की को देखा तो फूट-फूटकर रोने लगे। फिर वे एक पल भी वहाँ नहीं रुके। उन्होंने कहा, ''इस घर में, मैं एक बूँद पानी तक नहीं पी सकता।''

(घ) ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने विधवा-विवाह को समाज-सम्मत और कानूनी घोषित कराने के लिए वातावरण बनाया। उन्होंने अपने बेटे

की शादी भी एक विधवा से कर दी। इस कारण उनके रिश्तेदारों ने भी उनका विरोध किया, किंतु वे किसी के आगे नहीं झुके। वे लंबे समय तक बंगाल में विधवा-विवाह के समर्थन में लड़ते रहे और अपने उद्देश्य में सफल हुए।

(ङ) विद्यासागर ने बहु विवाह प्रथा का विरोध किया क्योंकि कुलीन घरानों के लोग केवल पैसे के लोभ में आकर विवाह करते थे। उनमें वैवाहिक कर्तव्यपालन करने की जरा भी भावना नहीं होती। इस तरह जिन औरतों की शादी केवल नाममात्र के लिए ही होती थी, उन्हें शादी से प्राप्त होने वाले सुख की कोई आशा नहीं होती थी। नतीजा यह होता था कि सच्चे प्रेमपात्र के अभाव में उनके हृदय की प्रेम-भावना अतृप्त रह जाती थी। वे क्षीण होती रहती थीं या अनैतिकता का शिकार हो जाती थीं।''

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) जहाँ इच्छा होती है वहाँ अवसर भी मिल जाते हैं।
उसने यह साबित कर दिया कि जहाँ चाह वहाँ राह क्योंकि कई मुसीबतों के बाद भी उसने जीत हासिल कर ली।

(ख) असाधारण
इस साल इस टीम ने अभूतपूर्व प्रदर्शन किया।

(ग) विफल होना
वह उसे हराना चाहता था परन्तु उसकी सारी तकनीकों पर जैसे घड़ों पानी पड़ गया।

(घ) जारूकता
बच्चों में चेतना विकसित करना आवश्यक है ताकि वे अपने दायित्वों को समझ सकें।

उ०2. सज्जन = दुर्जन
निर्भीक = डरपोक
विद्वान = मूर्ख
शर्म = निर्लज
साधारण = असाधारण
प्रवेश = निकास

उ०3. शिक्षा = शिक्षाएँ
दुकान = दुकानें
बूढ़ा = बूढ़े
शिक्षक = शिक्षकगण
स्त्री = स्त्रियाँ
संस्था = संस्थाएँ

अध्याय 19

परनिंदा

पाठ-बोध

उ०1. (क) साहित्यशास्त्रियों के अनुसार रसों की संख्या दस है।

(ख) लेखक के अनुसार निंदा वह चीज है जिसके बिना हमारा जीवन वीरान हो जाता है।

(ग) खेल में राजा-रंक का भेद नहीं होता है।

(घ) संयोजक वह होता है जो किसी कार्यक्रम का आयोजन करता है।

(ङ) कबीरदास महात्मा तथा समाज सुधारक थे।

उ०2. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (ii)

उ०3. ''परनिंदा मीठी रोटी है जिधर से तोड़ो उधर से मीठी'' अर्थात लेखक ने निंदा पर कटाक्ष करते हुए यह कहा है। लेखक के अनुसार, इसमें सुनने वाले को भी आनंद आता है तथा निंदक भी रसलीन रहता है।

उ०4. (क) लेखक ने निंदा करने को सबसे सस्ता और सरल मनोरंजन का साधन कहा है क्योंकि इसके लिए न किसी ऑडिटोरियम की आवश्यकता है और न किन्हीं अन्य उपकरणों की, न निमंत्रण-पत्र छपवाने का झंझट, न सभा-सोसाइटी बनाकर चुनाव करने की किल्लत, न मासिक चंदा।

(ख) कबीरदास ने निदंक की महत्ता पर लिखा है कि-

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय,
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।
तिनका कबहुँ न निंदिए, जो पायन तर होय,
कबहूँ उडि़ आँखिन परे, पीर घनेरी होय।।

(ग) लोग पीठ पीछे निंदा करते हैं क्योंकि निंदा करने का मजा पीठ पीछे ही है।

(घ) एक व्यक्ति ने मजाक-मजाक में अपनी सासजी के बारे में कुछ कह दिया था। किसी भिड़ाने वाले ने और नमक-मिर्च लगाकर

श्रीमती जी से कह दिया है। कल दिन-भर घर में खाना नहीं बना और शाम को श्रीमती सब सामान भी पैक कर लिया है और मायके जाने की तैयारी कर ली है।

(ङ) आज जबकि व्यक्ति अपने में ही सिमटता चला जा रहा है, तब परनिंदा के लिए ही सही एक बैठक में तो बैठता है।

व्याकरण-बोध

उ०1. पाप-पुण्य = पाप और पुण्य   माता-पिता = माता और पिता

दाल-रोटी = दाल और रोटी   गंगा-यमुना = गंगा और यमुना

उ०2.

विशेषण	**भाववाचक संज्ञाएँ**
निंदा, परेशान, अनुभव, महंगा, भोला, बुरा, सावधान, लापरवाह	भोलापन, परेशानी, बुराई, अनुभवी, आवश्यकता, सावधानी, महँगाई

उ०3. सुअवसर = सु   अभिमान = अभि

अपमान = अप   अधिगम = अधि

अध्याय 20
बूढ़ी काकी

पाठ-बोध

उ०1. (क) बुढ़ापा बचपन का पुनरागमन होता है क्योंकि इस आयु में वृद्ध व्यक्ति बालकों जैसी क्रियाएँ करने लगते हैं।

(ख) काकी से लाडली का अनुराग था क्योंकि वह अपने दोनों भाईयों से बचकर अपने हिस्से का मिठाई-चबैना काकी के पास बैठकर खाती थी।

(ग) बूढ़ी काकी पूड़ियों की कल्पना कर रही कि खूब लाल-लाल, फूली, नरम-नरम होंगी।

(घ) कड़ाह के पास काकी को बैठा देखकर रूपा को गुस्सा आ गया। तथा काकी को भला-बुरा बोल दिया।

(ङ) रूपा ने पश्चाताप किया क्योंकि उससे काकी को भूखा रखने का अपराध हो गया था।

उ०2. (क) (iii) (ख) (iii) (ग) (ii)

उ०3. (क) अत्याचार (ख) बुद्धिमान (ग) पूड़ियों, हृदय

(घ) काकी, जूठी (ङ) अधर्म (च) स्वार्थपरता

(छ) अपराध

उ०4. (क) जब काकी ने अपनी संपत्ति अपने भतीजे के नाम करी तो सभी ने उनसे कहा कि अब वह और उसकी पत्नी दोनों काकी की सेवा करेंगे। लेकिन ये सभी वादे केवल एक दिखावा मात्र थे।

(ख) जब काकी की नाक में पूड़ियों की खुशबू पहुँची तो काकी का मन एक छोटे बच्चे के समान पूड़ी खाने के लिए अधीर हो गया।

(ग) बुढ़ापे में व्यक्ति की स्वादिष्ट पकवानों को खाने की इच्छा प्रबल हो जाती है। जैसा कि बूढ़ी काकी की स्वादेंद्रियाँ सक्रिय हो गई थीं।

(घ) आधी रात समाप्त होने के बाद जब रूपा काकी के लिए भोजन का थाल लाई तो उन्हें परमानन्द प्राप्त हुआ, क्योंकि वह उन सब पकवानों के पाने की आशा भी खो चुकी थी।

उ०5. (क) बुढ़ापे की तुलना लेखक ने बचपन से की है।

(ख) भतीजे ने संपत्ति लिखाते समय खूब लंबे-चौड़े वादे किए।

(ग) बुद्धिराम के घर पर शहनाई बजने का कारण उसके बड़े लड़के का तिलक आया था।

(घ) बूढ़ी काकी की कल्पना में पूड़ियों की तस्वीर नाचने लगी। खूब लाल-लाल, फूली, नरम-नरम होंगी। कचौड़ियों में अजवाइन और इलायची की महक आ रही होगी।

(ङ) जब रूपा ने देखा कि लाड़ली जूठी पत्तलों के पास चुपचाप खड़ी है और बूढ़ी काकी पत्तलों पर से पूड़ियों के टुकड़े उठा-उठाकर खा रही है। रूपा का हृदय सन्न हो गया।

(च) लाडली ने काकी का हाथ पकड़ा और ले जाकर जूठी पत्तलों के पास बैठा दिया।

(छ) कहानी के अंत में रूपा ने कंठावरुद्ध स्वर में कहा, ''काकी उठो, भोजन कर लो। मुझसे आज बड़ी भूल हुई, उसका बुरा न मानना। परमात्मा से प्रार्थना कर दो कि वह मेरा अपराध क्षमा कर दें।''

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) पुनः आना

रोहित के पुनरागमन पर सब खुश थे।

(ख) बहुत समय बाद

कालांतर में ही सही पर आज तुम्हारी मेहनत रंग लाई।

(ग) पत्नी

रूपा, बुद्धिराम की अर्धांगिनी थी।

(घ) सज्जनता

काकी की भलमनसाहत का रूपा ने पूरा फायदा उठाया।

उ०2. (क) प्रस्थान

तिलक के बाद सभी मेहमानों ने प्रस्थान किया।

(ख) अनुकूल

तिलक का कार्य रूपा के अनुकूल हुआ।

(ग) नरक

स्वर्ग–नरक आसमान में नहीं बल्कि धरती पर ही है।

(घ) अनुचित

रूपा ने काकी के साथ अनुचित व्यवहार किया।

उ०3. (क) रायता (ख) कचौड़ियाँ (ग) दही

(घ) पूड़ियाँ (ङ) तरकारी

उ०4. (क) लालच आना

उसकी थाली में पकवान देखकर मेरे मुँह में पानी आ गया।

(ख) मनमोहक सपने दिखाना

संपति को भतीजे के नाम करते समय सबने काकी को सब्जबाग दिखाये।

(ग) डर लगाना

आज भी सुनामी के नाम से हृदय काँपने लगता है।

(घ) बिना अर्थ वाली बात करना

रामू इतना बड़ा हो गया है परन्तु अब भी बे सिर पैर की बात करता है।

अध्याय 21

मशाल

पाठ-बोध

उ०1. (क) मनुष्य ने पंच प्रकृतियों में अग्नि पर अधिकार किया।

(ख) लेखक के अनुसार वनस्थली में भगदड़ आग लग जाने से मची।

(ग) मशाल ज्योति की प्रतीक है।

उ०2. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (ii)

उ०3. (क) लालिमा (ख) कंठ से कंठ, अभिनंदन

(ग) दुपहरिया, प्रकाशपुंज (घ) छाया, चकाचौंध

(ङ) संध्या, कलगान (च) लालिमा, सहम उठा।

उ०4. (क) अर्थ है मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।

(ख) मशाल ने अंधकार को मिटा दिया। अब यह अंधकार सिमटकर हमारे अंतरमन में आ गया है। जब बाहर इसका दिख पड़ना असंभव है।

(ग) उस दिन मानव ने अंधकार पर विजय प्राप्त कर ली। सभ्यता का प्रारंभ उसी दिन से हुआ। जला हुआ वन खेत हुआ, खेत में घर बना, घर में मशाल जली।

उ०5. (क) लेखक को ईश्वर से शिकायत है कि दिन बनाकर तुम्हें संतोष नहीं हुआ, तो तुमने रात बनाई; प्रकाश तुम्हारे लिए काफी नहीं था, जो तुमने अंधकार बनाया। अंधकार बनाया और हमें उसमें भटकने, तड़पने, बिलबिलाने, चिल्लाने को छोड़ दिया।

(ख) मशाल का महत्व समझाने के लिए अपनी कल्पना को अति प्राचीन युग की ओर मोड़ना आवश्यक है क्योंकि जब पहले-पहल मानव इस धरा-धाम पर अवतरित हुआ होगा! उसने देखी होगी उषा की लालिमा। उसने देखा होगा दुपहरिया का दिपदिपाता प्रकाश-पुंज। फिर उसने देखी होगी संध्या की वही लालिमा। उसने देखा होगा लेकिन इस लालिमा को देखते ही वह सहम उठा होगा। अंधकार कितना बड़ा आतंक था! उसके लिए वही अंधकार, जब बाघ-. सिंह दहाड़ेंगे, दिग्गज चिंघाड़ेंगे, अजगर फुफकारेंगे। फिर यदि उस

अंधकार में कभी आँधी, तूफान, झड़ी-वर्षा का सामना हो गया, तब तो उसके लिए मानो प्रलय की ही घड़ी आ पहुँची। वह उस समय कैसा थर-थर काँपता होगा, उसका छोटा-सा प्राण उसकी विशाल दानवी देह में किस तरह व्याकुल हो उठता होगा।

(ग) पंच प्रकृतियों के अंतर्गत मिट्टी (क्षिति), जल, पावक, गगन, समीर आते हैं। उनमें सबसे अधिक प्रबल पावक को माना गया है।

(घ) रात्रि के गहन अंधकार को दूर करने के लिए विधाता ने निम्नलिखित साधनों में से बिजली, चाँद और तारों का प्रकाश मानव को दिया।

व्याकरण-बोध

उ०1. किंतु, जो, और, तब, पर

उ०2. (क) कल-कल (ख) झर, झर (ग) गरजन (घ) टप-टप

उ०3.

उत्पीड़न	पुल्लिंग	चीख	स्त्रीलिंग
मारकाट	स्त्रीलिंग	रंगरलियाँ	स्त्रीलिंग
खून खराबा	पुल्लिंग	रासलीलाएँ	स्त्रीलिंग
तड़पन	स्त्रीलिंग	भगदड़	स्त्रीलिंग
छटपटाहट	स्त्रीलिंग	उछलतीं	स्त्रीलिंग

उ०4. उसके, उसके, वह, उसका, उसकी।

अध्याय 22

भारत की प्रथम अंतरिक्ष यात्रा

पाठ-बोध

उ०1. (क) भारतीय युवक-युवतियों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपने शौर्य और पराक्रम का परिचय दिया है।

(ख) भारत के प्रथम अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा हैं।

(ग) लीडर राकेश शर्मा ने 8 अप्रैल, 1984 को अंतरिक्ष की ओर प्रस्थान किया।

(घ) राकेश शर्मा का जन्म पंजाब के पटियाला जिले में हुआ था।

(ङ) अंतरिक्ष से इन्होंने भारत के विषय में कहा कि 'सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्तान हमारा'।

उ०2. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (ii)

उ०3. (क) भारतीय युवक और युवतियों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपने शौर्य और पराक्रम का परिचय दिया है।

(ख) यात्री राकेश शर्मा का जन्म सन् 1949 में पंजाब के पटियाला जिले में हुआ था। उनकी माता का नाम श्रीमती तृप्ता शर्मा एवं पिता का नाम देवेंद्रनाथ शर्मा है। राकेश शर्मा की अधिकांश शिक्षा-दीक्षा हैदराबाद में हुई।

(ग) भारत-रूस संयुक्त अंतरिक्ष यात्रा मिशन के अंतर्गत भारत के कई युवकों को अंतरिक्ष की भारहीनता और रेडियो-सक्रियता को सहन करने के लिए अनेक परीक्षणों एवं प्रशिक्षणों से गुजरना पड़ा क्योंकि पहले मनुष्य के स्थान पर चूहे, कुत्ते, खरगोश आदि भेजे जाते थे।

(घ) श्री राकेश शर्मा ने मुख्य रूप से शरीर पर भारहीनता के प्रभाव, योग की क्रियाओं का हृदयगति पर असर और पदार्थ-विज्ञान तथा भू-संपदा संबंधी ऐसे प्रयोग किए।

(ङ) प्रस्थान करने से पूर्व राकेश शर्मा ने कहा था- "अपने देशवासियों और माता-पिता का आशीर्वाद मेरे साथ है। आप सभी को शुभकामनाएँ हैं। मैं वायुसेना का प्रशिक्षित पायलट हूँ, जोखिम

उठाना और खतरों से खेलना ही हम लोगों का काम है। आप मेरे देशवासियों से कह दें कि मैं अपने देश का माथा ऊँचा रखूँगा।''

श्री राकेश शर्मा ने मुख्य रूप से शरीर पर भारहीनता के प्रभाव, योग की क्रियाओं का हृदयगति पर असर और पदार्थ-विज्ञान तथा भू-संपदा संबंधी ऐसे प्रयोग किए

(च) राकेश शर्मा जब अंतरिक्ष में गए तो वे अपने साथ बहुत-सी चीजें ले गए थे। इनमें पंडित रविशंकर के सितार वादन और अल्लारखा के तबला वादन के कैसेट थे। भारतीय भोजन में आम-पापड़ (आमरस) और अनानास रस शामिल थे। वे अपने साथ वेजिटेबल पुलाव, आलू-छोले एवं हलवा आदि पदार्थ भी ले गए थे।

(छ) अपने 'स्वागत' का उत्तर देते हुए राकेश शर्मा ने एक स्थान पर कहा था, ''मैं वायु सैनिक हूँ, मेरा सम्मान देश के हर सैनिक का सम्मान है। मैं उन सब का बहुत आभारी हूँ, जिनके आशीर्वाद और शुभकामनाओं से हम लोग सकुशल अपना कार्य करके पुनः धरती पर लौटे हैं। हमारी यह यात्रा समाप्त हुई, पर साथ ही आज से अंतरिक्ष यात्रा का एक नया अध्याय आरंभ होता है। यदि दिलचस्पी लें तो अंतरिक्ष यात्राएँ न केवल अपने देश के लिए, बल्कि समूची मानवता के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।''

व्याकरण-बोध

उ०1. लुटेरा = आ　　　तैराक = आक

लड़ाई = ई　　　चढ़ाई = आई

पढ़ाकू = ऊ　　　असरदार = दार

उ०2. स्वस्थ = अस्वस्थ　　　प्रभावित = अप्रभावित

संभव = असंभव　　　सम्मानित = असम्मानित

सक्रियता = असक्रियता　　　असीम = सीमित

उ०3. (क) वे　　　(ख) इनमें　　　(ग) वे

(घ) इन